Volume: 4 Issue: 4 Pages: 142-147

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में मानवीय अधिकारों एवं सामाजिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन।

[*1] जगदीश कुमार

[*1] असिस्टेंट प्रोफेसर, (शिक्षाशास्त्र) श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या पी.जी. कॉलेज हाथरस, उतार प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 24/March/2025
Accepted: 23/April/2025

***Corresponding Author**
जगदीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, (शिक्षाशास्त्र) श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या पी.जी. कॉलेज हाथरस, उतार प्रदेश, भारत।

सारांश:
व्यक्तित्व व्यक्ति के ऐसे तत्व एवं कारक हैं जो उनके जीवन के विकास क्रम में अनुकूलित पर्यावरण तैयार करती है आंतरिक व्यक्तित्व पूर्णतया जीवन शैली को बढ़ावा देती है। व्यक्तित्व, समायोजन, सामाजिक मूल्य और मानवाधिकार विद्यार्थियों के अध्ययन एवम मार्गदर्शन में आशान्वित आधार प्रदान करते है। इस अध्ययन में व्यक्तित्व को प्रभावित करने में मानवीय अधिकारों, सामाजिक मूल्यों की सार्थकता को देखा गया है विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में प्रभावी कारक का औचित्य पूर्ण अध्ययन जरूरी है जो समसामयिक हो। उच्चतर माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थियों की आयु अवस्था के विकास क्रम में व्यक्तित्व निर्माणकारी तत्वों मानवीय अधिकार तथा सामाजिक मूल्यों का विशेष महत्व रहता है।

मुख्य शब्द: व्यक्तित्व, मानवीय अधिकार, सामाजिक मूल्य, माध्यमिक शिक्षा

प्रस्तावना:

शिक्षा मानवीय गुणों का विकास करते हुए व्यक्ति के अंदर विवेक तथा ज्ञान रूपी ज्योति का पुंज तैयार करती है और शिक्षा के ज्ञान और विवेक रूपी प्रकाश तथा प्रभाव से व्यक्ति अज्ञानता और अंधकारों से मुक्ति प्राप्त करता रहता है साथ ही साथ और शिक्षा के स्वरूप, कार्यों, उद्देश्यो के अनुरूप ज्ञान कौशलो एवं युक्तियो का अर्जन करता है और समाज में अपने योगदान से समाज को एक दिशा प्रदान करता है। समाज अपने सामाजिक कारकों के माध्यम से व्यक्तित्व भिन्नता के अनुरूप मूल कारकों का सृजन करती है। व्यक्तित्व के विकास के लिए अनेक कारक प्रभावी होते हैं जिसका प्रभाव व्यक्ति जीवन के कदम-कदम पर मददगार साबित होते हैं।

व्यक्तित्व का अर्थ

व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के वे तत्व हैं जो जन्मजात प्रवृत्तियो आवेगो अर्जित प्रवृत्तियां, अनुभव, आदत, गुण, सौम्य, शील, विचार, आचरण, शारीरिक संरचना भाषाई संरचना इत्यादि के रूप में व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक रूप धारण कर के व्यक्ति में विशिष्टता का गठन करती है। व्यक्तित्व प्रमुख शील गुणों में सामाजिकता, व्यवहारिकता, ईमानदारी, संवेगात्मकता, आत्मनिर्भरता, सत्यवादिता, त्याग, आत्म संयम तथा सहयोग का भाव आदि सम्मिलित रहते हैं अतः व्यक्तित्व व्यक्ति के संपूर्ण व्यवहारों का योग है। बिसंज और बिसंज "व्यक्तित्व मनुष्य की आदतों दृष्टिकोण और लक्षणों का संगठन है जो जैविकिय, सामाजिक एवं सांस्कृतिकरण की संयुक्त प्रक्रियाओं से उत्पन्न होता है।" मार्टिन प्रिंस "व्यक्तित्व व्यक्ति के समस्त जन्मजात संस्थाओं, आवेगो, प्रवृत्तियो, झुकावों एवं मूल प्रवृत्तियां तथा अनुभव के द्वारा अर्जित संस्कार एवं प्रवृत्तियो का योग है।

ड्रेवर "व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक मानसिक नैतिक सामाजिक गुनो के सुसंगठित और गयात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन में आदान-प्रदान के लिए व्यक्त करता है।"

व्यक्तित्व के गुण

व्यक्तित्व के गुणों का समन्वित रूप व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य दोनों रूपों में प्रतिबिंबित होते हैं।

1. (१)शारीरिक गुण
2. मानसिक गुण
3. सामाजिक गुण
4. तीनों गुना में स्थायित्व

व्यक्तित्व के निर्धारक तत्व

किसी भी व्यक्तित्व को निर्धारित करने वाले तत्व वह कारक हैं जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में व्यक्ति के अंदर बाहर विशेष रूप में परिलक्षित होते हैं जो निम्न है—

जैविकीय कारक

मनोवैज्ञानिक कारक

समाजीक कारक

सांस्कृतिक कारक

मानवीय अधिकार

मानवाधिकार एक ऐसा दर्शन है जो मानव के कल्याण और आनंद पर केंद्रित है मानवाधिकार के अंतर्गत नैतिक एवं आध्यात्मिक तथा भौतिक बहुलता भी सम्मिलित हैं। मानव अधिकार वे अधिकार हैं जो हमारी प्रकृति Nature या स्वभाव में रचा बसा है इसके बगैर हम मानव के रूप में अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकते हैं मानवीय अधिकार, व्यक्तित्व निर्धारण को पूर्ण रूप से विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करती हैं। साथ ही इनके द्वारा माननीय गुणों प्रतिभाओं चेतना का सदुपयोग किया जाता है। सभी मनुष्य स्वतंत्र पैदा होते हैं और सम्मान तथा अधिकारों में समान होते है मानव अधिकार सभी मनुष्यों के लिए निहित अधिकार है, चाहे वह उनकी जाति, लिंग, राष्ट्रीयता, जातीयता, भाषा, धर्म या कोई अन्य स्थिति कुछ भी हो। वह मनुष्य होने के कारण मानव धर्म को धारण करता है तथा उसमें मानवीयता होती है। मानव मानव एक समान की विचारधारा को मानव अधिकार के अंतर्गत समाहित किया गया है। इसमें जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार गुलामी और यातना से मुक्ति अपने राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता काम और शिक्षा का अधिकार और इसमें और बहुत कुछ शामिल हैं जो बिना भेदभाव के सभी को ए अधिकार समान रूप से प्राप्त होते हैं मानव अधिकारों के विचार में निहित दो मूल हैं मानवीय गरिमा और समानता मानवाधिकारों को उन बुनियादी मानकों को परिभाषित करने के रूप में समझा जा सकता है जो गरिमा पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है उसकी सार्वभौमिकता इस तथ्य से प्राप्त होती है कि इस संबंध में काम से कम सभी मनुष्य समान है उनमें उनके बीच भेदभाव नहीं करना चाहिए और नहीं कर सकते हैं यह दो मान्यताएं या मूल्य वास्तव में मानवाधिकारों के विचारों को मानने के लिए पर्याप्त हैं और यह मान्यताएं शायद ही विवादास्पद हो यही कारण है कि मानवाधिकारों को दुनिया की हर संस्कृति हर सब भी सरकार और हर प्रमुख धर्म से समर्थन मिलता है यह एक सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त है।

मानवीय अधिकार का अर्थ

“सभी व्यक्तियों को सामान्य से जीवन जीने का अधिकार प्रताप हो सके और सब समझ में मानवीय मूल्यों की उत्तरोत्तर प्राप्ति हो सके।” मानवीय अधिकार वे अधिकार है जो सभी लोगों को प्राप्त है चाहे उनका लिंग, राष्ट्रीयता, निवास, जातीयता, धर्म, रंगरूप, आदि के रूप में कोई भी अंतर हो। मानवीय अधिकार भेद भाव, वैमनस्यता, ईर्ष्या से ऊपर उठकर इंसान को मानवीयता की दृष्टि से देखना है।

डब्ल्यू रिचर्ड्स के अनुसार “मानव अधिकार के न्यूनतम आवश्यकताएं हैं जिनकी मांग अधिकार स्वरूप होनी चाहिए तथा जिनके अभाव में कोई भी मानव अपनी क्षमता को विकसित न कर सकता है और नहीं मानव के जीवन को व्यतीत कर सकता है।”

लास्की के शब्दों में “अधिकार सामाजिक जीवन की वह परिस्थितियों हैं जिनके अभाव में सामान्यतः कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पता है।”

श्रीनिवास शास्त्री “अधिकार समुदाय के कानून द्वारा स्वीकृत वह व्यवस्था नियम अथवा रीति है जो नागरिक के सर्वोच्च नैतिक कल्याण में सहायक हो।”

मानव अधिकार आयोग के समांतर संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्देशन तथा हमारी संस्कृति आदर्श “वासुर्धव कुटुंबकम” को सिद्धांत से व्यवहार में लाने के लिए, अस्पृश्यता समाप्त करने एवं दलितों को अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए केंद्र तथा राज्य सरकार ने कई कानूनी प्रयास किए हैं संविधान के अनुच्छेद 17 में अपराध अधिनियम 1955 के रूप में पुनर्निमित किया गया है दलित वर्ग के प्रति अपराध को रोकने तथा निवारण के लिए 30 जनवरी 1990 को अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अधिनियम 1989 लागू किया गया है साथ ही बलराम अधिनियम 1986, बालक अधिनियम 1960 राष्ट्रीय आयोग महिला अधिनियम 1990 अल्पसंख्यक अधिनियम 1992 जैसे कई विधि कानून पारित किए गए हैं।

सामाजिक मूल्य

सामाजिक मूल्य वे मूल्य जिनके करण डेथ समाज को महत्वपूर्ण स्थान देता है समाज सेवा अपने से बड़ों का आदर सम्मान करना संस्कृति का संरक्षण करना आज सामाजिक मूल्य है जिसे प्रेरित होकर व्यक्त समाज कल्याण की ओर उन्मुख होता है। सामाजिक मूल्य सामाजिक संबंधों को संतुलित करने तथा सामाजिक व्यवहारों में एकरूपता उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होते हैं मूल्य समाज के सदस्यों के आंतरिक भावनाओं पर आधारित होते हैं इसलिए इसलिए यह भावनाएं एक व्यक्तित्व का रूप धारण करते हुए जीवन को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करती है जो समाज व्यवस्था व संगठन के लिए आवश्यक होता है।

राधा कमल मुखर्जी के शब्दों में सामाजिक मूल्य समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त हुए इच्छाएं या लक्ष्य हैं जिनका आंत्रीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया हैंमाध्यम से होता है जो की प्रतीत अधिमान्यताएं मानक एवं अभिलाषाएं बन जाते हैं।

जॉनसन “सामाजिक मूल्य वे सामान सिद्धांत हैं जो दिन प्रतिदिन के जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करते हैं यह न केवल मानव व्यवहार को दिशा प्रदान करने की साथ-साथ अपने आप में एक आदर्श है।सामाजिक मूल्य न केवल देखा जाता है कि क्या होना चाहिए बल्कि यह भी देख ते हैं कि क्या सही है क्या गलत है।”

सामाजिक मूल्य सामाजिक व्यवस्था के अहम पक्ष होते हैं सामाजिक व्यवस्था को सुनिश्चित करने इनका प्रमुख किरदार होता है।

- सामाजिक मूल्य समाज के मानदंड तैयार करते हैं और सामाजिक आचरण और व्यवहार के लिए दिशा निर्देशित करते हैं जो व्यक्ति के ऊपर आंतरिक एवं बाय रूप में व्यक्ति को प्रभावित करता है इस प्रकार से यह व्यक्तित्व के निर्धारण एवं निर्माण में भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कार्यदाई होता है।
- सामाजिक मूल्य समाज के सदस्यों की आंतरिक भावनाओं पर आधारित होते हैं।
- सामाजिक मूल्य के आधार पर ही हम सामाजिक घटनाओं और समस्याओं का आकलन करते हैं।
- सामाजिक मूल्यों के आधार पर हम समाज में होने वाले परिवर्तन नवाचार तथा सामाजिक आविष्कारों का इस्तेमाल करते हैं।
- मूल्य संघर्ष उसे स्थिति में होते हैं जब कोई व्यक्ति या समूह को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है जहां उनके मूल्य आपस में टकराते हैं।

समाज अपने सदस्यों के जीवन को सुरक्षित सुविधाजनक एवं सब्जी बनाने के लिए सामाजिक मूल्यों का निर्माण करता है यह सर्वोपरि और सत्य है कि मनुष्य का मुंह में रहता है इसलिए उसे किसी आचार संहिता का पालन करना पड़ता है ताकि सभी शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके कुछ सामाजिक मूल्य इस प्रकार से हैं- -

- सामाजिक अनुरूपता
- अनुशासन
- सामाजिक संवेदना
- परोपकार
- सहनशीलता
- सामाजिक समायोजन
- समाज के प्रति निष्ठा एवं ईमानदारी
- सामाजिक न्याय
- पंचशील

ये सामाजिक मूल्य सामाजिक मानदंड, लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर सामाजिक परिस्थितियों तथा सामाजिक विषयों का मूल्यांकन किया जाता है।

माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी माध्यमिक शिक्षा है। माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत 14 से 18 वर्ष के बालक बालिकाएं जो कक्षा 9 से 12 में अध्यनरत होते हैं

कार्टर वी गुड इनके शब्दों में "माध्यमिक शिक्षा शिक्षा का वह समय है जो सामान्य रूप से 14 से 18 वर्ष की आय के बालकों के लिए क्रियान्वित किया जाता है।"

बालक के जीवन में आने वाली शिक्षा के क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा रीड का कार्य करती है जिस प्रकार से रीड मनुष्य के समस्त शरीर को संभालती है ठीक उसी प्रकार से बच्चों के जीवन के निर्माण में माध्यमिक शिक्षा की कार्यशैली शिक्षण पद्धति एवं पाठ्यक्रम विशेष महत्व रखते हैं और यही से बालक के जीवन में उच्च शिक्षा का आधार तैयार होता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

व्यक्ति के विकास के लिए व्यक्तित्व का विशेष भूमिका रहती है। व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक निर्धारक कारकों के प्रभावों का अध्ययन की आवश्यकता है। शोधकर्ता को इस शोध की आवश्यकता इसलिए महसूस हुई की व्यक्तित्व के निर्धारण में अनेक ऐसे कारक हैं जिसमें सामाजिक मूल्य तथा मानवीय अधिकारों की भागीदारी यह निश्चित करती है कि बालक बालिकाओं के व्यक्तित्व में किस प्रकार से स्थाईपन लाया जाय। सामाजिक मूल्य एक ऐसे मूल्य है जो व्यक्ति के विकास में आंतरिक एवं बाह्य कारक हैं सामाजिक मानकों के सापेक्ष बंधुत्व अनुसरण, सामाजिक आदर्श, छोटे एवम् बड़े लोगों के प्रति आदर सम्मान, सामाजिक स्थिति के अनुरूप चिन्तन कर्तव्यों एवं कार्यों का निर्वहन, उत्तम व्यवहार,उत्तमकार्य, उत्तम सौंदर्यात्मक विचार, शील गुण,और अन्य रूप से व्यक्ति को प्रभावित करते हैं और व्यक्ति के अंतःकरण में एक ऐसे बीज का बीजारोपण करते हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के रूप में परिलक्षित होने लगता है।

व्यक्तित्व के निर्धारण एवं विकास में मानवीय अधिकार एक प्रकार का अनुशासनात्मक, क्रियात्मक, वैचारिक, समानता, समान हक, समान सम्मान का बोधक है। सामान्य रुप से मानवाधिकार को देखा जाए तो मानव जीवन में भोजन पानी का अधिकार, शिक्षा का अधिकार बाल शोषण उत्पीड़न पर अंकुश, महिलाओं के लिए घरेलू हिंसा से सुरक्षा, उसके शारीरिक शोषण पर अंकुश, प्रवास का अधिकार, धार्मिक हिंसा से रक्षा, इत्यादि को मानव अधिकार के श्रेणी में रखा गया है। समाज में राज्य में तथा देश में मानव अधिकार का विधिवत क्रियान्वयन होने के फलस्वरूप मानवीय अधिकारों के सकारात्मक पक्ष का प्रभाव देश के नागरिकों के दिलों दिमाग पर एक छवि प्रकाशित करता है जो व्यक्तित्व के निर्माण में और निर्धारण में विशेष योगदान प्रदत्त करता है।

शोध कार्य का सीमांकन

शोध कार्य को पारदर्शी बनाने एवं चयनित उपकरणों तथा क्षेत्रों को स्पष्ट करने के लिए कुछ आवश्यक सीमाओं का ध्यान रखना जरूरी समझा गया जो कि इस प्रकार से है।

1. शोध कार्य में केवल हाथरस जनपद के कुछ उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।
2. हाथरस जनपद के उन्हीं विद्यालयों को चुना गया है जो माध्यमिक शिक्षा बोर्ड उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त हैं।
3. शोध कार्य में केवल हिंदी भाषाई उच्च माध्यमिक विद्यालयों को चयनित किया गया है।
4. शोध कार्य में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों दोनों का चयन किया गया है।
5. शोध कार्य में कुल 6 सरकार द्वारा अनुदानित (एडेड) सरकारी विद्यालय तथा 6 वित्त विहीन गैर सरकारी विद्यालय का चयन किया गया है।

संबंधित साहित्य का अवलोकन

शोध कार्यों में शोध समस्या से संबंधित साहित्य की समीक्षा करना विशेष महत्व रखता है जिससे शोधकर्ता को अपने शोध कार्यों में एक उचित दिशा एवं दशा तथा सकारात्मक मनोवृति जन्म लेती है। इस प्रस्तुत शोध पत्र में भी चयनित समस्या को देखते हुए कुछ शोध कार्यो को ध्यान में रखा गया है और उसका अवलोकन किया गया है।

सविता मिश्रा 2009 इन्होंने उड़ीसा के 510 पुरुष तथा महिला शिक्षक जो ग्रामीण व शहरी थे के मूल्य निर्धारण का अध्ययन किया उन्होंने पाया कि ग्रामीण व शहरी प्रभावी शिक्षक सौंदर्य मूल्य में अलग थे जबकि ग्रामीण तथा शहरी और प्रभावी शिक्षक सैद्धांतिक सामाजिक राजनीतिक मुद्दों में समान थे।

नूका हैदर 2010 नूका हैदर ने उच्च शिक्षा में मूल्य शिक्षण के लिए शिक्षण विकास कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि शिक्षक विकास में अच्छी नीति निर्माण शिक्षक विकास में अच्छी नीति निर्माण के शैक्षिक कार्यक्रमों की आवश्यकता है जिससे अच्छे शिक्षक का निर्माण हो सके और सामाजिक मूल्यों का विकास हो सके जिससे वह समझ में और लोकप्रियता हासिल कर सके। वुड्स 2017 मूल्य दैनिक जीवन के व्यवहार को नियंत्रित करने का सामान्य सिद्धांत है। इसी के आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियों तथा विषयो का मूल्यांकन किया जाता है इन मूल्यों का एक सामाजिक पृष्ठभूमि होती है इसलिए प्रत्येक समाज के मूल्य में हमें विभिन्नता मिलती है इन मूल्यों का सामाजिक प्रभाव यह होता है कि हिंदुओं के विवाह विच्छेद की भावना पनप नहीं पाती है और विधवा विवाह को उचित माना जाता है सामाजिक मूल्य सामाजिक मान है। यादव डी.एस. (2012) भारत में मानवाधिकार में महिलाओं के अधिकार के हनन में कन्या भ्रूण हत्या महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, हिंसात्मक का अपराध, दहेज उत्पीड़न, इन सभी स्थितियों के निवारण के लिए कानून बनाए गए हैं उत्पीड़न करता को कठोर सजा का प्रावधान किया गया है महिलाओं की समस्याएं पारिवारिक व सामाजिक हैं जिनके निवारण के लिए महिलाओं में जागरूकता तथा संयुक्त रूप से समस्या निवारण की प्रयास करने आवश्यक है।

चतुर्वेदी अरुण तथा लोढ़ा संजय 2006 भारत में मानवाधिकार विषय में सुरेंद्रनाथ कौशिक का लेख भारतीय उपमहाद्वीप में "मुस्लिम महिलाओं के मानवाधिकार सिद्धांत एवं व्यवहार" में दर्शाया है कि समान अधिकार के अनुसार विवाह संबंध स्त्री व पुरुष दोनों ही सभा से समिति पर राइट है तथा स्त्री की समाधि के बिना विवाह वैध माना जाता है यही स्थिति विवाह विच्छेद पर लागू होती है

1966 में संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार ने महिलाओं के मानवाधिकार का पृथक स्पष्ट विवेचन किया है। इसके अंतर्गत गर्भवती महिला को मुझे देने पर प्रतिबंध लगाया है महिलाओं को सोवियत निक प्रस्तुति अवकाश सुबह सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान की गई है।

मिश्रा महेंद्र कुमार 2008 भारत में मानवाधिकार विषय प्रकाशन में शिक्षण कार्यक्रम में मानवा अधिकार को सम्मिलित करने की आवश्यकता दर्शायी गई है इसमें शिक्षा के लक्ष्य मानव की आवश्यकताओं व रूचियों के अनुभव बनने पर जोर दिया गया है शिक्षा द्वारा बालक के व्यक्तित्व के विकास व जीविकोपार्जन क्षमता उत्पन्न करनी जरूरी है। इसमें वैज्ञानिक मानवाधिकार शिक्षा जहां आनंदपुर साहसिक एवं स्वतंत्र को से संबंधित है साथ ही गंभीर व सच्चे अर्थों में मानव कल्याण से युक्त है।

समस्या कथन

अनुसंधानकर्ता शोध समस्या के रूप में "उच्च माध्यमिक स्तर के विधार्थियों के व्यक्तित्व पर मानवीय अधिकार एवं सामाजिक मूल्यों के प्रभाव अध्ययन" का चयन किया है। शोधकर्ता द्वारा यह प्रयास किया गया है जिससे कि शोध कार्य उत्कृष्ट हो।

शोध कार्य का उद्देश्य

- सामाजिक मूल्यों के आधार पर व्यक्तित्व की अवधारणा का अध्ययन करना।
- मानवीय अधिकारों के आधार पर व्यक्तित्व की अवधारणा का अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सामाजिक मूल्य एवं मानवीय अधिकारों के प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

इस शोध कार्य में निम्नलिखित परिकल्पना निर्धारित की गई है।

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सामाजिक मूल्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा ।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालय के सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मानवीय अधिकार का पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालय के सरकारी विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सामाजिक मूल्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
4. उच्च माध्यमिक विद्यालय के सरकारी विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मानवीय अधिकार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
5. उच्च माध्यमिक विद्यालय के गैर सरकारी विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सामाजिक मूल्य का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
6. उच्च माध्यमिक विद्यालय के गैर सरकारी विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मानवीय अधिकार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

शोध कार्य में प्रयुक्त शब्दो का परिभाषीकरण

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय वे विद्यालय जिनमें कक्षा में 11वीं और 12वी के विद्यार्थी अध्यनरत रहते हैं।
2. सरकारी विद्यालय वे विद्यालय जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है और सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त करते हैं।
3. गैर सरकारी विद्यालय गैर सरकारी विद्यालय ऐसे विद्यालय जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होते हैं तथा स्वयं वित्तीय एवं संसाधन की व्यवस्था स्वयं करते हैं।
4. सामाजिक मूल्य भारतीय समाज में सही सुरता सामूहिकता प्रति सट्टा बड़ों के प्रति सम्मान धार्मिकता आध्यात्मिक जातिवाद परिवारवाद की संजीविता जैसे कई पारंपरिक मान्यताएं सामाजिक प्रचलन रीति रिवाज इत्यादि सामाजिक मूल्य है।
5. मानवीय अधिकार मानवीय अधिकार बुनियादी अधिकारों में बोलने की स्वतंत्रता, गोपनीयता, स्वस्थ जीवन, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, जिम्मेदारी, ईमानदारी सम्मान, समान भागीदारी एवम् हक और सुरक्षा के साथ-साथ पर्याप्त जीवन स्तर शामिल है।
6. व्यक्तित्व व्यक्ति के वे आंतरिक एवं बाह्य तत्व जो व्यक्ति को विशेषता प्रदान करते हैं। जैसे शारीरिक संरचना, रंग रूप, रहन सहन, आचरण,शील गुण आदि।

अनुसंधान विधि एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान कर्ता द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सामाजिक मूल्य एवं मानवाधिकार के प्रभाव के अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है प्रस्तुत किए गए शोध में रेंडम विधि का प्रयोग करते हुए न्यादर्श का चयन किया गया है इस शोध कार्य में कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 150 सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी तथा 150 गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में हाथरस जनपद के 6 सरकारी (एडेड कॉलेज) तथा 6 गैर सरकारी कॉलेज मान्यता प्राप्त को सूचीबद्ध किया गया है। इन सभी विद्यालयों के छात्रों को लॉटरी विधि से चयन किया गया है चयन प्रक्रिया के बाद प्रत्येक विद्यालयों से 25-25 छात्रों का चयन किया गया है इस प्रकार से गैर सरकारी विद्यार्थियों की संख्या 150 एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या 150 रखी गई है।

मान्यता प्राप्त एडेड (सरकारी) कॉलेज

विद्यालय का नाम	विद्यार्थियों की संख्या
1 पी सी बंगला इंटर कालेज हाथरस	25
2 सरस्वती इण्टर कालेज हाथरस	25
3 श्री उमेश चंद्र कौशिक आदर्श विद्या निकेतन इंटर कॉलेज हाथरस	25
4 श्री जवाहर स्मारक इंटर कॉलेज मिटई हाथरस	25
5 जनता इंटर कॉलेज रूहेंरी	25
6 महात्मा गांधी इण्टर कालेज	25
कुल चयनित कॉलेज की संख्या	25

मान्यता प्राप्त गैर सरकारी (प्राइवेट) कॉलेज

1 दीप इण्टर कालेज मेदू हाथरस	25
2 अनमोल कुमारी इंटर कॉलेज धोरपुर, हाथरस जंक्शन हाथरस	25
3 वी.पी.मदनावत इण्टर कालेज नगला आल हाथरस	25
4 आमोल कुमार इंटर कॉलेज धौरपुर हाथरस	25
5 संतोष कुमार हरिभेजी चंदेल इण्टर कालेज महो हाथरस	25
6 श्री कन्ही इण्टर कालेज केमार हाथरस	25
कुल चयनित कॉलेज की संख्या	25

शोध उपकरण

1. एस डी कपूर. एस.एस. श्रीवास्तव और जी.एन.पी.श्रीवास्तव द्वारा निर्मित "स्कूल पर्सनेलिटी क्वेश्नएयर।"
2. विशाल सूद आरती आनंद द्वारा निर्मित "मानवाधिकार जागरूक परीक्षण।"
3. स्व निर्मित उपकरण "सामाजिक मूल्य मापनी।"

शोध प्रक्रिया में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, मानक विचलन तथा मध्यमानो के मध्य सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रस्तुत सांख्यिकी प्रक्रिया में सभी प्राप्ताकों के मध्यमान और मानक विचलन ज्ञात किए गए उद्देश्यों के संदर्भ में विभिन्न समूह की तुलना करने के लिए टी परीक्षण का प्रयोग करके क्रांतिक अनुपात Critical Ratio ज्ञात किया गया है। मध्यमानो के मध्य की अंतर की सार्थकता 0.005, सार्थकता स्तर पर ज्ञात की गई अर्थात शून्य परिकल्पना का परीक्षण 0.05 सार्थकता स्तर पर किया गया (गैरेट 2004)

Table 1: सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व (स्कूल पर्सनालिटी क्वेश्नएयर) और सामाजिक मूल्यों से प्राप्त मध्यमानो की तुलना।

क्रमांक	समूह का नाम	N	M	£	CR	सार्थक अंतर
1	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी के व्यक्तित्व मापनी प्राप्तांक	150	101.82	29.76		
2	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी के सामाजिक मूल्य प्राप्तांक	150	112.86	23.10		

सारणी1 निरीक्षण करने से ज्ञात होता है की सरकारी विद्यालय के द्वारा व्यक्तित्व और सामाजिक मूल्य मापनी के प्राप्तांको के मध्यमान क्रमशः 101.0एवं 112.86 है । मानक विचलन क्रमशः 29.76तथा 23.10 है । मध्यमानो के बीच सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात critical Hratio की गणना की गई जो P<0.05 है। यह सांख्यिकी की दृष्टि से सार्थक है। अतः उपयुक्त प्रथम परिकल्पना अस्वीकार होती है। यह कहा जा कता है कि सरकारी विद्यालयों के व्यक्तित्व सामाजिक मूल्य प्राप्तांक के मध्यमान में सार्थक अंतर है। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के प्राप्त व्यक्तित्व और सामाजिक मूल्य के मध्यमानो में सार्थक अंतर होना यह दर्शाता है। कि विद्यालयों में व्यक्तित्व और सामाजिक मूल्य में भिन्नता है।

Table 2: गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानवीय अधिकार मापनी (मानवीय अधिकार जागरूक परीक्षण) तथा व्यक्तित्व मापनी से प्राप्त मध्यमानो की तुलना।

क्रमांक	समूह का नाम	N	M	£	CR	सार्थक अंतर
1	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यतित्व मापनी प्राप्तांक	150	114.0	29.76	2.23	P<0.05
2	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों मानवाअधिकार जागरूक परीक्षण प्राप्तांक	150	113.0	29.10		

सारणी 2 का निरीक्षण करने पर ज्ञत होता है सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों की व्यक्तित्व (हाई स्कूल पर्सनेलिटी क्वेश्नएयर) और मानवा अधिकार जागरूक परीक्षण के प्राप्तांक के मध्यमान 114.0 तथा 113.0 है और मानक विचलन क्रमशः 29.76 एवं 29.10 है। मध्यमानो के बीच सार्थक अंतर ज्ञात करने के क्रान्तिक अनुपात critical ratio का उपयोग किया है जिसका P <0.05 के गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं मानव अधिकार के बीच संबंध सांख्यिकीय नजरिए से सार्थक है। यहां पर परिकल्पना स्वीकृति प्रतीत होती है।

Table 3: गैर सरकारी तथा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व परीक्षण पर सामाजिक मूल्य मापनी (सामाजिक मूल्य मापनी)से प्राप्त मध्यमानो की तुलना।

क्रमांक	समूह का नाम	N	M	£	CR	सार्थक अंतर
1	गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व के प्राप्तांक	150	160.0	26.58	2.57	P <0.05
2	गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य प्राप्तांक	150	112.0	28.80		

सारणी 3 में निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है विद्यालय गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व हाई स्कूल पर्सनालिटी क्वेश्नएर और सामाजिक मूल्य के प्राप्ताकों के मध्यमानके संबंध की जांच करने के लिए माध्यमान ज्ञात किया गया है जो क्रमशः 116.0 तथा 112.0 है। तथा ज्ञात किए गए मानक विचलन क्रमशः 26.58तथा 28.80 है। परिणाम की सार्थकता ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात critical ratio ज्ञात किया गया है जो 2.23है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट होता है कि गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों व्यक्तित्व और सामाजिक मूल्य में सार्थकता है जो यह भी स्पष्ट करती है कि परिकल्पना स्वीकृत है।

Table 4: गैर सरकारी विद्यालय के विद्यालय में अध्यनरत विद्यार्थियों को व्यक्तित्व पर मानवाधिकार परीक्षण के प्राप्तांक का तुलना।

क्रमांक	समूह का नाम	N	M	£	CR	सार्थक अंतर
1	गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यक्तित्व परीक्षण में प्राप्त	150	160.0	26.58	2.57	P <0.05
2	गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों मानवाधिकार परीक्षण प्राप्तांक	150	113.0	25.40		

सारणी क्रमांक 4 के निरीक्षण के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व परीक्षण और मानवाधिकार परीक्षण प्राप्तांको के माध्यमान ज्ञात किया गया जो क्रमानुसार 116.0 एवम 113.0 तथा मानक विचलन 26.58 तथा 25.40 है परिणाम की सार्थकता अंतर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है प्राप्त परिणामों के अनुसार क्रांतिक अनुपात 2.57 है तथा सार्थक अंतर P<0.05 है। यहां पर परिकल्पना पर स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष व्याख्या सारणीयो के तुलनात्मक अध्ययन करने उपरान्त स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मानवीय अधिकारों का तथा सामाजिक मूल्य सार्थक प्रभाव पड़ता है। शोध कार्य की शैक्षिक उपादेयता: शोधार्थी द्वारा किए गए शोध कार्यों के उपरांत यह स्पष्ट हो रहा है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में मानवीय अधिकारों एवं सामाजिक मूल्यों का प्रभाव पड़ता है अतः बालकों के अंदर निहित गुणों को परिष्कृत करने एवं गुणों को विकसित करने के लिए मानवीय अधिकारों और सामाजिक मूल्यो के प्रभाव से व्यक्तित्व में सकारात्मक ऊंचाई दी जा सकती है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए इन प्रभावकारी तत्वों का ध्यान रखना चाहिए।

संदर्भ सूची:

1. प्रो लाल रमन बिहारी एवम डॉ शर्मा कृष्ण कांत **भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवम समस्याये, **आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ ISBN 978- 81- 910554- 8- 1
2. कौल लोकेश**शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली **विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
3. त्यागी जी. एस. डी.एवं पाठक पी. डी.* *शिक्षा के सिद्धान्त** श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा 2 ISBN- 978- 93- 81602- 01- 0
4. डॉ श्रीवास्तव डी.एन.एवम श्रीवास्तव वी. एन.**अनुसंधान विधियां**साहित्य प्रकाशन, आगरा ISBN- 81- 87755- 61- 10
5. राय पारस नाथ **अनुसंधान परिचय**लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा ISBN – 81- 85778- 72- 8 संस्करण 2005 ।
6. डॉ सक्सेना,सरोज **शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार**साहित्य प्रकाशन, आगरा ISBN – 81- 87755- 12- 1 नवीन संस्करण 2015 ।
7. डॉ अस्थाना विपिन एवम अस्थाना श्वेता**मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन** विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा 2 ISBN – 81- 7457- 107- 8
8. डॉ वर्मा प्रीति एवम डॉ श्रीवास्तव डी एन**आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान**विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा ISBN 81- 7457- 077- 2
9. कौल लोकेश**मेथोडॉलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च**विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
10. सिद्धू कुलवीर सिंह **मेथोडॉलॉजी ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन** स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड ISBN 978- 81- 207- 0101- 4
11. गुप्ता प्रोफेसर एस पी **शारदा पुस्तक भवन**पब्लिशर्स &डिस्ट्रीब्यूटर्स 11यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद। ISBN 81- 86204- 16- 4
12. डॉ फाड़ीया बी एल **शोध पद्धतियां**साहित्य भवन पब्लिकेशंस : आगरा